स्वामी विवेकानंद के युग परिवर्तन सम्बन्धी विचार

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव ,

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ (उ.प्र.)

शोध सारांश

स्वामी विवेकानन्द ने सामाजिक प्रगति में बाधक अंशविश्वासों तथा अनुपयोगी मान्यताओं को समाप्त करने का आह्वान किया। अपनी विदेश यात्रा के द्वारा आपने समुद्री सफर पर बंधक तथा विदेशियों के साथ खान–पान से अशुद्ध हो जाने की मान्यताओं का विरोध किया। स्वामी विवेकानन्द जी ने धर्म को भारत की आत्मा का केन्द्र बिन्दु घोषित किया। आप धर्म के आधार पर मनुष्य में दया, स्नेह, सेवा, क्षमा, त्याग तथा सहानुभूति आदि भावनाओं को जागृत करना चाहते थे। स्वामी विवेकानन्द स्वामी जी ने भारत के युवा वर्ग को शक्ति, स्वाबलंबन और संगठन का संदेश दिया। स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार शिक्षा का एक प्रमुख ध्येय नैतिक चरित्र का विकास करना है। मेरा मूल मंत्र है–व्यक्तित्व का विकास करना, शिक्षा के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को उपयुक्त बनाने के सिवाय मेरी और कोई उच्चाकांक्षा नहीं हैं मेरा ज्ञान अत्यन्त सीमित हैं, मैं उस सीमित ज्ञान की शिक्षा बिना किसी संकोच के बनाये रखता हूँ। जिस विषय को मैं नही जानता हूँ उक्त विषय पर मेरा कोई ज्ञान नहीं है। आज जरूरत है युवाओं की ऊर्जा को सकारात्मक सोच और दिशा देने की। इसके साथ ही एक ऐसे नेतृत्व की जो स्वामी विवेकानन्द की तरह ऊर्जावान हो और सबसे बड़ी बात कि सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर हो। युग परिवर्तन के लिए स्वामी विवेकानन्द जी ने विशेषकर युवाओं को कर्म योग के मार्ग पर चलने का आह्वान किया – उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्ति के बिना रूको मत। यहाँ स्वामी जी का तात्पर्य पवित्र लक्ष्य को प्राप्त करने से है न कि भौतिकतावादी क्षण भंगुर सफलताओं से है।

Key Words: *स्वामी विवेकानंद,धर्म और विज्ञान,समन्वय,युग परिवर्तन,विचार*

स्वामी विवेकानन्द को नये युग का प्रवर्तक इस अर्थ में भी कहा जा सकता है कि आपने धर्म और विज्ञान के समन्वय की पुरजोर वकालत की। इस वकालत की पृष्ठभूमि भारत की दरिद्रता रही। अपने गुरू रामकृष्ण की मृत्यु के पश्चात्, जब उनके कार्यों की पूरी जिम्मेवारी स्वामी विवेकानन्द पर आ गई तो इसका ठीक तरह से निर्वहन करने के लिए उन्होंने भारत का भ्रमण करना जरूरी समझा। इस भ्रमण के द्वारा आप भारत की समस्याओं को ठीक से समझ लेना चाहते थे। वे जानना चाहते थे कि आखिर धर्म, अध्यात्म, संस्कृति, परम्परा और नैतिकता की समृद्ध विरासत होने के बावजूद भारत इतना अकिंचन क्यों बना हुआ है? क्यों उसका सिर झुका रहता है ? वह सम्मान और स्वाभिमान के साथ क्यों नहीं जी पाता ? इन प्रश्नों का उत्तर उन्हें गरीबी के रूप में मिला। उन्होंने देखा कि भारत की बहुसंख्यक जनता निर्धन हैं। वह भूखी और फटेहाल है। उसे दो वक्त की रोटी, दो गज कपड़ा और दो हाथ का छप्पर भी नहीं मिल पा रहा है। वह कुपोषण, अशिक्षा, और बदहाली का शिकार है। यह स्थिति दयनीय और असहनीय थी।

विवेकानंद यह देखकर आकुल–व्याकुल हो उठे। उन्हें समझते देर नहीं लगी कि भारत की रीढ़ झुकी क्यों है ? क्यों वह दीन–हीन, बेबस और लाचार बना हुआ है। इन सबके पीछे गरीबी और सिर्फ गरीबी थी इसलिए उनके सामने यक्ष प्रश्न यही था कि इस गरीबी को कैसे दूर किया जाए ? कौन सा जतन कौन सा उपाय किया जाए कि भारत इस भयानक गरीबी से मुक्त हो सके। इसके लिए स्वामी विवेकानन्द को जो सबसे संगत और समाधानपरक उपाय लगा वह पश्चिम से धन लाना था।

स्वामी विवेकानंद ने जान लिया था कि यूरोप के पास अकूत धन संपदा है। भौतिक वस्तुओं का अंबार है। आर्थिक समृद्धि और दैहिक जरूरतों को मिटाने वाली सामग्री उसके पास प्रचुरता में है। इसलिए वहाँ से कुछ धन–संपदा मिलेगा तो भारत की गरीबी दूर हो सकती है। लेकिन यह धन वे मुफ्त में नहीं चाहते थे। स्वामी विवेकानन्द का मानना था कि कोई उन्हें खैरात में कुछ दे यह उन्हें स्वीकार्य नहीं था। इसलिए आप याचक की तरह झोली फैला कर कुछ माँगने के लिए वहाँ नहीं जाना चाहते थे। आप चाहते थे कि यदि हमें वे धन देते हैं तो हमें भी उन्हें कुछ देना चाहिए और चूँकि हमारे पास धर्म की अकूत संपदा है, इसलिए उनके धन के बदले में हम उन्हें धर्म का दान देंगे। यह एक प्रकार का विनिमय होगा। जिसमें लेने–देने वाला दोनों पक्ष समानता के स्तर पर होगा। मित्रता के लिए यह समानता जरूरी होती है, क्योंकि समानता के बगैर मित्रता हो ही नहीं पाती। अतः पश्चिम वालों से केवल लेने के बदले भारत को उसे कुछ देना भी होगा। और यह देना धर्म का हो सकता है, क्योंकि यही भारत के पास प्रचुरता में है। विवेकानंद यह दान इसलिए देना चाहते थे कि यूरोप धार्मिक रूप से अकिंचन है। आपने अपनी गहन दृष्टि से यह देख लिया था कि जिस प्रकार भारत दैहिक स्तर पर दरिद्र है, उसी प्रकार यूरोप आत्मिक स्तर पर दरिद्र है। अतः दरिद्रता उसकी भी मिटनी चाहिए और यह मिट सकती है धर्म से, अध्यात्म से। इस आध्यात्मिक संपदा के नहीं होने के कारण ही पश्चिम इतना अशांत है। अब चूँकि पश्चिम के पास भौतिक समृद्धि बहुत है और यह समृद्धि विज्ञान के द्वारा पैदा हुई है, इसलिए पश्चिम वाले विज्ञान के अलावा और किसी चीज की महत्ता स्वीकार ही नहीं करते।

वे विज्ञान को ही सर्वोपरि मान बैठे हैं। यों तो होने के लिए धर्म वहाँ भी है, लेकिन वहाँ धर्म बाहरी कर्मकाण्ड से ज्यादा गहरे नहीं जा पाया है। जबकि वास्तविक धर्म आंतरिक बोध है, आत्मा की अनुभूति है, स्वयं का साक्षात्कार है। पश्चिम वालों ने यह बोध, यह अनुभूति, यह साक्षात्कार प्राप्त नहीं किया है। इसलिए आप आत्मिक स्तर पर खोखले हैं, रिक्त हैं। यही रिक्तता, यही खोखलापन उनमें अशांति पैदा करती है, उन्हें बेचैन बनाए रखती है। अतः इस बेचैनी को दूर कर शांति प्राप्त करने के लिए आत्मिक स्तर पर भरा होना जरूरी है, और यह भराव आत्मबोध वाले धर्म से हो सकता है, जो कि भारत के पास है। इसलिए यदि भारत के धर्म और पश्चिम के विज्ञान का समन्वय हो जाए, तो भारत की गरीबी और यूरोप की अशांति दोनों दूर हो जाऐगी। इसलिए आपने धर्म और विज्ञान के मिलने का मसौदा प्रस्तुत किया कि आने वाले दिनों में दोनों मिल जाएंगे।

स्वामी विवेकानंद ने स्पष्ट रूप से कहा कि–''आज हम बुद्धिवादिता के इस चमकते सूर्य को चाहते हैं जिसमें बुद्ध का हृदय हो, आश्चर्यजनक, असीम प्रेम और करुणा का हृदय। यह संगम हमें उच्चतम दर्शन प्रदान करेगा। विज्ञान और धर्म मिलेंगे

और हाथ मिलाएंगे। कविता और दर्शन मित्र बनेंगे। यह भविष्य का धर्म होगा और यदि हम उसे ढाल सकें तो यह सभी कालों और सभी लोगों के लिए होगा। यह एक रास्ता है जो आधुनिक विज्ञान को स्वीकार होगा क्योंकि यह स्थिति लगभग आ गई है। जिन दिनों स्वामी विवेकानन्द ने यह बात कही थी वह एक अर्धशती पहले का काल था। उन दिनों धर्म और विज्ञान की ऐसी गलबहियाँ करने का ख्याल संभवतः किसी के जेहन में नहीं आया था। इसलिए धर्म और विज्ञान के समन्वय का यह प्रस्ताव शायद बिल्कुल नया प्रस्ताव था, जो पूरी मानवता के हित में था। इस प्रस्ताव के द्वारा स्वामी विवेकानन्द एक ऐसे मनुष्य को निर्मित करना चाहते थे, जो भौतिक और आध्यात्मिक दोनों दृष्टियों से समृद्ध हो। इसी समृद्धि से एक ऐसा संतुलित समाज विकसित होगा, जिसमें भूख, गरीबी, गुलामी, शोषण और वर्चस्व को कोई स्थान नहीं मिल पाएगा। तभी पूरी दुनिया सुख–शांति और चैन से रह पाएगी। स्वामी विवेकानन्द निःसंदेह भारतमाता के महान सपूतों में से एक थे। आपने सही अर्थों में सामाजिक और आर्थिक नवजागरण का बीड़ा उठाया। आप शक्ति और शिव के समन्वयक थे। उस समय भारतीय समाज मत–मतांतरों और अंधविश्वासों के जाल में फँसा हुआ था। परतंत्रता के उस काल में जब देश को सम्पूर्ण समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त न था, तब भारतवासी संसार में सिर उठाकर चल नहीं सकते थे। ऐसे समय में स्वामी विवेकानंद ने विश्व को भारत की महत्ता से परिचित कराया। हिन्दू धर्म की पांडित्यपूर्ण व्याख्या का श्रेय स्वामी विवेकानन्द को ही दिया जाता है।

स्वामी विवेकानंद का कहना था कि धन, विद्या और ज्ञान प्राप्त करने का अवसर प्रत्येक को समान रूप से मिलना चाहिए। भारतवासी पुरुषार्थ करे तो एक दिन यही स्थिति आएगी। आप कहा करते थे कि जब तक समाज का एक भी व्यक्ति अशिक्षित, दुर्बल और कुसंस्कारित है, तब तक हर शिक्षित व्यक्ति, जो उनके लिए काम नहीं करता विश्वासघाती है। आपका मानना था कि संसार को मनुष्यता के पथ पर आगे ले जाने का काम केवल भारत ही कर सकता है और भारत की ओर से यह महान कार्य तेजस्वी, ब्रह्मचारी और तपस्वी युवकों के द्वारा ही सम्पन्न होगा। आप चाहते थे कि ''मनुष्य को केवल मनुष्य होना चाहिए, बांकी सब कुछ अपने आप हो जाएगा।

स्वामी विवेकानंद ने आवाहन किया कि आज हमें आवश्यकता है वीर्यवान, तेजस्वी, श्रद्धासंपन्न और दृढ़ विश्वासी युवकों की। ऐसे युवक मिल जाएँ तो संसार का कायाकल्प हो जाएगा। वे चाहते थे कि ऐसे युवक निकलकर, संगठित होकर मानव के कल्याण के लिए कार्य करें। स्वामी विवेकानंद ने धर्म का जो व्यावहारिक रूप सामने रखा वह वैयक्तिक, सामाजिक और राष्ट्रीय समृद्धि का प्रबल साधन बन सकता है। उन्होंने मानव की आत्मा और गरिमा की वास्तविकता को समझ लिया था और इसके बल पर स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया था। धर्मनिरपेक्ष समाज में स्त्रियों का गौरवपूर्ण स्थान, गरीबों की मुक्ति, पददलितों के शोषण उन्मूलन इत्यादि के स्वामी विवेकानन्द कट्टर समर्थक थे। स्वामी विवेकानंद के अनुसार सच्चा धर्म वही है जो मनुष्य को 'मानव' और 'इंसान' बना सके। भजन, कीर्तन या शास्त्रों के अध्ययन से कुछ नहीं होता। इसके लिए किसी साधन की जरूरत होती है, जो मानव को सही अर्थों में 'मानव' बना सके। स्वामी विवेकानन्द ने स्पष्ट कहा था कि मैं अपने देश के प्रत्येक व्यक्ति को निराशावादी हो जाना भले ही पसंद कर

लूँ, अंधविश्वासों में डूबा, मूर्ख होना कदापि पसंद नहीं करूँगा। आपने यह भी कहा था कि ''मैं धर्म को या ईश्वर को 'ईश्वर' नहीं मान सकता जो एक विधवा की आँखों के आँसू न पोछ सके या किसी अनाथ को खाना न दे सके।'

संदर्भ ग्रथ सूची

- सिंह, डॉ0 कर्ण,विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा, गोविन्द प्रकाशन, लखीमपुर–खीरी,2011–12
- चौबे, प्रो0 एस0पी0, आधुनिक शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद,2010
- पाण्डेय, प्रो0 रामशकल, प्राचीन भारत के शिक्षा मनीषी, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद,2008
- जैन, प्रदीप कुमार, विद्यामेद्य, विद्या प्रकाशन मन्दिर लि0, प्रेस यूनिट, टी0 पी0 नगर, मेरठ ,2009
- झा, राकेश कुमार, योजना, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, जनवरी 2010, जनवरी 2013
- स्वामी विवेकानंद का शिकागो में धर्म सम्मलेन भाषण ,११ सितम्बर १८९३
- सिंह, डॉ0 ओ0 पी0,शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा शास्त्री, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद,2012
- शर्मा डॉ0 योगेंद्र,भारतीय राजनीतिक चिंतन,डा0 सी0 एल0 बघेल, अलका प्रकाशन, कानपुर 2005